

五

H-285

धर्मरत्न बजावनी सुरत श्री महाविहार

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो श्रीमदमाघपागलाक श्रुवाय ॥ ॥ अष्ट
 मीवतविधिमाह ॥ पंचत्रय पंचवीहि स्वांता नक्षा हाभा मास स्वात पंचाष
 धि पंचपल्लव पंचामृत उय्मृइआल कगती दक्रिया मव हाहाल स्वाक
 चाकय कलगविधानधन ॥ ॥ धर्मसालास गमयनं लपनयानां सन्मा
 नऊनयानां ॥ ॐ लां मूलां धजा चामल कृत् पनाक आदिं मंगल वमु श्री मूमा
 घपागया प्रतिमा आदिं मूनाक प्रतिमा वाय शुद्धाय समधुलदयकां मूना
 नं प्राकावतय स्वर्णकलगंवा मूनाकलगंवा मधुलउयकां कलग

वायकमथथ ॥ पूर्व वडां कगउपाध्या दक्रिया मूमाघपागपा ० क पश्चिमप
 रुकलुवीन उरुयपमकल्यामिथ मूनावयदवल धमथकाली नेमृत्
 जापमाला उरुयसाधक वायव्यदधुचिन्नायाक ॐ गानकमधुल कृकती ॥
 मध्वग्धनपमयुत्रहावक ॥ ॥ क्रापां सूर्यार्धयाय ॥ शुद्रपादार्धकाय
 मूनामिकासन ॥ ॥ थन गमूत्र गमधनयाय ॥ मनु ॥ ॐ हं जां कीं खं हं ॥ ॥
 ॐ मूमाघपनि शुद्धया जायतथा गताया इह न सम्पक्कं वृद्धाय ॥ नयथा ॥ गमध
 य २ वि गमधय २ समकनधिति २ शुद्धसत्त्व महापमक ॥ धाल २१ ॥ ॐ पंच गम

मातामहाधनाय ॐ देवकधूपं निमलुयामि ॥ ॥ पादार्घ्यं ॥ श्रीमन् श्रीश्री
पंचगममातारुद्राजकायपाद्यं प्रतिष्ठु स्वाहा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॐ नन्दाय स्वाहा ॥
ॐ रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ ऊयाय स्वाहा ॥ ॐ शोम्पाय स्वाहा ॥ ॐ कपिलाय स्वाहा ॥ ॐ
पंचगममातृकाय वक्रपुष्पं प्रतीक्षु स्वाहा ॥ ॥ पूजास्तुति ॥ नन्दा रुद्रा ऊया शो
म्पा कपिला च कृपावति ॥ सर्वपापविशुद्धार्थं पंचगममातृकां नमः ॥ ॥ गम
मुनेहायाय ॥ गममुने गममयं श्रीचंद्रधिसर्पिक गमदकं ॥ निर्दिष्टं पंचगमं च
पवित्रं पापनाशनं ॥ ॥ पूजारुलसंकल्प ॥ दानपतिः ॥ मूर्त्यास्मी उपासध

ब्रह्मकर्मशी उन्मथुलार्चनादिप्रिसमाधियागमनकं कलगग ॥ गममहाका
लसफवृद्धि पंचगममाता वैश्वानर श्रीलक्ष्मी पूजनादि श्रीमदमाघपागलाक
श्वर महामथुलदेवता पूजनार्थं ॐ देवकमथुलपुष्पराशुसंकल्पयामि ॥ ॥
थन देवस्वरावपूजा ॥ ॥ जाप धूप ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ शुद्धकुशुनुषाचरास
सदृशं पञ्चवयसस्त्रितं सर्वरूविदधानमारुयवयं श्रीपागजापारुमं ॥ वाभ
नापिकमथुलचकमलंद ॥ अरुमं प्ररुके वन्दहं पञ्चमश्वरकुशियसालाका
नकम्पामया ॥ ॥ पादार्घ्यं ॥ ॐ रुद्रगवन् श्रीमन् श्री ३ श्रीमाघलाकश्वररुद्रा

एकचक्रकमलपाद्यप्रतीकस्वाहा॥ ॥स्नानवाय॥ पलस्नानतय॥ ॐ म
 द्विपञ्चकं॥ ॐ श्रीमदभाघपागलाकश्वराय नमः ४ स्वाहा॥ ॐ शुक्रवद्रथयस्वा
 हा॥ ॐ पञ्चवक्त्रिताय स्वाहा॥ ॐ श्रुमिनारुतथगतमोलीधराय स्वाहा॥
 ॐ श्रुयप्रदाय स्वाहा॥ ॐ वज्रप्रदाय स्वाहा॥ ॐ श्रीपागधराय स्वाहा॥ ॐ ऊ
 पमालाधराय स्वाहा॥ ॐ कमधुलधराय स्वाहा॥ ॐ दधुधराय स्वाहा॥ ॐ पु
 रुकधराय स्वाहा॥ ॐ लाकानुकम्पाय स्वाहा॥ ॐ सर्ववाञ्छितप्रदाय नमः ४ स्वाहा
 ॥ ॥पञ्चापचाय पूजा॥ स्तुति॥ ॥ ॐ नमो श्रीमदभाघपागलाकश्वराय

७ न किंकारं भगवन्नाथं कुरुणास्त्रिधमानसं अभाघपागलाकश्वराय
 २ नमः ॥
 लाकश्वराय गिरिजाय नमः ॥ अभाघपागलाकश्वराय नमः ॥ अभाघपागलाकश्वराय
 पागकं॥ २ ॥ थनगुम्भधुलदत्त॥ अकालासुखवलि॥ विमर्जन॥ पा० आच
 क्रियाय॥ ॥ कायरूपपूजा॥ नहस्पमधुलदत्तक॥ नहस्पकिकाय॥ त्रिसमा
 धि॥ ॥ थनलिसर्वकलभदिपूजा॥ निवाञ्जनमकरनालचासगनभाय
 ॥ ॥ थयालिङ्गमधुलपूजा॥ जाप॥ धूप॥ निवाञ्जनमकरनालचासगन
 भाय॥ ॥ पादार्घ्यतय॥ नगवन् श्रीमन् श्री ३ अभाघपागलाकश्वराय महामधु
 लरुहाय कपाद्याचमनार्घ्यप्रतीकस्वाहा॥ ॥ स्नानवाय॥ ॐ अभाघपागला

ॐ ॐ अभाघपागलाकश्वराय नमः ॥ ॐ अभाघपागलाकश्वराय नमः ॥ ॐ अभाघपागलाकश्वराय नमः ॥

कञ्चनाय दीं स्वाहा ॥ ॐ दीं मेला कविज्याय दीं स्वाहा ॥ ॐ मधियमं स्वाहा
ॐ अमिताहाय नमः स्वाहा ॥ ॐ अभाघां कभय स्वाहा ॥ ॐ नात्राय स्वाहा ॥ ॐ
रुक्मीनाय स्वाहा ॥ ॐ सुधनकुमाय स्वाहा ॥ ॐ आर्यावलाकिनं श्वाय स्वा
हा ॥ ॐ खैरवसर्पनाय स्वाहा ॥ ॐ हयग्रीवाय स्वाहा ॥ ॐ अजिनाय स्वाहा ॥ ॐ अ
पराजिनाय स्वाहा ॥ ॐ माचसे मप्रमर्दनाय स्वाहा ॥ ॐ वनदाय स्वाहा ॥ ॐ अका
लमृगप्रगमनाय स्वाहा ॥ ॐ ऊयाय स्वाहा ॥ ॐ विज्याय स्वाहा ॥ ॐ ऊयविज
याय स्वाहा ॥ ॐ अरुयप्रदाय स्वाहा ॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥ ॐ वसंधवाय स्वाहा ॥

मध्यम ॥ ॥ ॐ प्रभु कवहाय स्वाहा ॥ ॐ स्वर्णवर्ण प्रभु विनन्दित राजाय
तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॐ सिंहविकीर्ण राजाय तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॐ स
प्रतिष्ठित राजाय तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॥ पूर्व ॥ ॥ ॐ समकवभुङ्गत
श्रीकृष्ण राजाय तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॥ ॐ विपश्चीन तथा गताय नमः स्वा
हा ॥ ॐ मिश्रित तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॐ विश्वजुवाय तथा गताय नमः स्वा
हा ॥ ॥ दक्षिण ॥ ॥ ॐ ककुब्धनाय तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॐ कनकमू
नय तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॐ काभपाय तथा गताय नमः स्वाहा ॥ ॐ अक

शुभं॥ ॥ स्वरावशुद्धा॥ पारार्घ्यं॥ ॥ स्नानवाय॥ ॐ मष्टिपञ्चङ्गं॥ ॐ श्रीमद
माघपागलाकधवाय स्वाहा॥ ॐ शुभवयसाय स्वाहा॥ ॐ पञ्चवक्त्रिनाय स्वाहा
॥ ॐ मृगिनाहनथागतमौलीधवाय स्वाहा॥ ॐ मृत्युप्रदाय स्वाहा॥ ॐ वनप्रदा
य स्वाहा॥ ॐ श्रीपागधवाय स्वाहा॥ ॐ ऊपमालाधवाय स्वाहा॥ ॐ कमधुलध
वाय स्वाहा॥ ॐ दधुधवाय स्वाहा॥ ॐ पुष्ककधवाय स्वाहा॥ ॐ लोकानुकंपाय स्वा
हा॥ ॐ सर्ववाञ्छितप्रदाय वक्रपुष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ ॥ धूलमधुलथिय॥ पागा
सनंवाय॥ पंचापचात्रपूजा॥ वास्यामुनि॥ ॥ लोकनाथं महानाथं आदिना

थं महेश्वरं॥ वन्द्यादाम्बुजानिम्बं रुजामितस्य सीदतु॥ ॥ ॥ थनवृगीज
नसकलं थास२नय॥ ॥ संखलं खविय॥ ॐ खधुनाहङ्गं॥ ॥ पंचगव्यविय॥
॥ गममृगं॥ गमयं श्रीवन्दधिसर्पिक॥ गदकं॥ निर्दिष्टं पंचगव्यं च पवित्रं पापनाश
नं॥ ॥ हने गंखलं खविय॥ गंखादकनशुद्धाङ्गं॥ ॥ पूजारसंकल्पयाक
॥ शुभमधुलदनक॥ लंखवलि॥ निवाञ्जनमकरुणालचा सगनंभाय॥ विसर्जन
॥ ॥ रुमि॥ गधन॥ संखलं खनंहाय॥ ॐ गंखादकनशुद्धाङ्गं॥ ॥ पंचगव्य
नंहाय॥ ॐ ऊंखलं॥ ॥ वजनंथिय॥ ॐ भदनीवकीरुववडवेधङ्गं॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ चनीतलननमे ॥

मधुलथाय ॥ वारुस्नानकाय ॥ ॐ वक्राद्वीकृष्टुनिधदयामि ॥ ॥ मधुलथि
यकंगय ॥ ॥ गमथा ॥ ॥ सर्वनाथागताभकंसर्वनाथलयं सर्वधर्माग्रनेत्रा
त्पदगममधुलमूर्ध्मं ॥ ॥ नमस्काय ॥ ॥ पादार्घ्यं ॥ रुगवनश्रीमन् श्री ३ वृद्धम
धुलरुदायकाय पादं प्रणिच्छ स्वाहा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॐ आर्यवेधाचनाय स्वाहा ॥
ॐ श्रीकात्याय स्वाहा ॥ ॐ वल्लभं वाय स्वाहा ॥ ॐ श्रीमिताकाय स्वाहा ॥ ॐ श्रीमाघ
सिद्ध स्वाहा ॥ ॐ वाचनाय स्वाहा ॥ ॐ मामक्ष स्वाहा ॥ ॐ पाधुलाय स्वाहा ॥ ॐ नाया
ये स्वाहा ॥ ॥ सिंधुयजुंमका. स्नान. नेधय. मन्. नाय ॥ नाय ॥ ॥ आर्यवे

आचनारखं सकलहितकवं श्रीमदकास्यसंघं. श्रीमन्वत्तारुवाखं सकलमृनिवयं
चामितारुमृनीमं ॥ आर्याभाग्रयसिद्धिकलिइतिहवं लाचनामामकीतां. नाया
नापाधुवाक् प्रशमितगिरसा. सर्वदाहं न तास्मि ॥ ॥ दग्गनाखंकन ॥ ॥ स्वा.
जाकिस्वपालथमिन्न ॥ ॐ समन्वाहवनुमावृद्धाश्रुगयादिक्रसस्मिता ॥ ३ ॥
स्वा. जाकि धंजानालाहाऊपंचान ॥ ॥ नययुयुधदमितव्यं. दक्रियजानुमधु
लं एथिवाप्रनिष्ठाप्य. हस्मांजलिंकृत्वायुयुधदमितव्यं ॥ ॥ नयनस्मेथुयु.
थायस क्कापांमिष्यपनिष्पनं ऊगपाप्लीनं एथिवीमधुलसचयाअ हागहा.

आलपाडा गुन्याश्रयसन्धानाडा दशनाखेन्यन्य ॥ ॥ गिष्वावाच ॥ सा इहं म
वनामादगिनास्ये ॥ ॥ मावला मपादाय यावदावाधिमधुनिषधुनात् वृद्धग
छामिरुगवने महाकावृष्टिके सर्वरु सर्वदर्शिनं सर्वरुययागीनं महापुत्रं
श्रुशकायनिवृत्तकायधर्मकाय गयरांगछामि द्विपदानां मय एवं द्वि
पित्रिपिडापायिकं साधुकावमदान् ॥ ॥ थनगिष्वावेनं कलसां गुन्याकवि
कियाता हनाथहगुत्तु किं कलसां थगुलीनामयाकनं गथ कलपालस्येन आ
दगविल मथं थगुलीनामयाकनं गथ कलपालं आह कल मथं थगु

लीवलासमायक्रयाताडा गलनधालसा वाधिरानपदमलानल पत्रमथय
वृद्धरुगवानयाकगयरायाय गथिंठम वृद्धरुगवानलाधालसा महाकवृष्टाडा
क समरुगिस्वविष्ठाक समरुखस्यविष्ठाक समरुखयनागयादं विष्ठाक
महापुत्रं सन्तानं रुदयायं मजिडा उपमानयं मजिडा धर्मगवीन थथीं
म वृद्धरुगवानयाकगयरायाय ॥ समरुमनूययाश्रयस थगुलीपकावन
निपालखपाल वाववाजिनिगयरायायधकं थथधडा मुत्तं गुनं कल
सां गिष्वायान धन्यपदविल साकलपुत्र साधु २ धन्य २ धकं श्रीगुनवदसत्त्व

स्वर्गदेव. मंडलदीपः बुध मंडल॥

नम्राहादयकल॥ ॥ कंचुलनम॥ ॥ ॐ नृपिभारुगवन्मूर्धनसम्पकं
वृक्षाविद्याचत्रासम्पन्नसुगतालाकविदन्मृगप्रवृषदम्पसायथि सास्नादवा
नाचमनृष्यानाच वृक्षारुगवान्. नमो वृक्षत्रयाय ॐ दंपुष्पमधुलंनिर्याकयामि
॥ ॥ दलिविय॥ ॥ ॐ नभावृक्षाय महाकन्या रात्रविहृत हृदयाय. प
त्रमात्मसमतागतचिह्नाय. प्रेक्षायुक्तमूर्धनसत्त्वार्थइव स्वकनकावि॥ ॥ ॐ दंव
लिदिव्य गरुडप्रसायनमृगयुक्त. सर्वसत्त्वाश्चानुवृत्ताया सम्पकंवा॥ ॥ प्रणिष्ठा
य. ॐ नमो ॥ ॐ गगनवज्रदुष्पहास्वाहा॥ ॥ ॐ निवृक्षमधुल॥ ॥ नमो धर्ममधु

ॐ नमो मंडलदीपः बुध मंडल॥ ॥ ॐ नमो मंडलदीपः बुध मंडल॥

लथिय॥ ॥ मथा॥ ॥ भक्तधर्माग्रसंरुतं ज्ञानचर्यावि॥ भधक॥ ॥ समक
रुडकायाग्रराषमधुलमूर्धन॥ ॥ पादार्घ्यतय॥ रुगवन्श्रीमन् श्री ३ धर्म
मधुलरुहायकपायाचमनार्घ्यप्रणिक्तस्वाहा॥ ॥ स्नानवाय॥ ॥ ॐ नृपिभारुगवन्मूर्धनसम्पकं
श्रीप्रह्लापात्रमितायस्वाहा॥ ॐ गद्युवृहायस्वाहा॥ ॐ दगुरुमीश्वरायस्वाहा॥
ॐ समाधिराजायस्वाहा॥ ॐ लंकावनायायस्वाहा॥ ॐ सद्धर्मपुत्रुयीकाय
स्वाहा॥ ॐ नथागतयुक्तकायस्वाहा॥ ॐ ललितविरुवायस्वाहा॥ ॐ सुवर्ण
प्रह्लास्रुमायस्वाहा॥ ॥ सिंधुयुक्तं मका. स्नान. नैवद्य. मत. यधर्मा॥ ॥

नात्र॥ ॥ प्रह्लापात्रमिनां नमानि गतं गभ्रादिव्यूहं दश॥ रत्नीकंच समाधिया
 ऊसहितं लंकावनायाहिधं॥ सद्धर्मपूजहंसगुक्कस्मृति शोदर्यवेस्मृति कं॥ श्रीसु
 वर्ण प्रह्लाहिधं च गिरसा धर्माथ मुक्तिप्रदा॥ ॥ दशगनाखं कन॥ ॥ स्वानजा
 किजा नाउ हाजालपंचान॥ ॥ साहं भवनामा ॐ मां वला म्पादाय यावदावा
 धिमनुनिखलुनात्॥ धर्मगयशंगकामि॥ विनागभं प्रवय॥ एवं द्विपिपिपिपि
 पिडापायिकं साधुकायं मदात्॥ ॥ हनाथ॥ हयुव॥ गथ कलपाललक्षणं आहू
 दयकल॥ म्थं थनीयादीनस॥ थुगुवलास आनम्यानाउ॥ गथवृद्धरुगवान

याकगयशयाता॥ म्थं धर्मयाकनं गयशयाय॥ किनं द्विधं धर्मयाकगयशयाय
 गुलं कस्य प्रसन्नरुयमाल॥ थनीयावलास॥ शुक्लाहमीधर्मपाफलाययान॥ या
 वत्काल वाधिरानहाना॥ म्थं रुचसम्यक्वाधि॥ थहानमधुलखलुमरुअलंका
 दशनायादं प्रसन्नरुयमाल॥ गथीरुधर्मधालसा॥ समस्तयागद्वयभाहमाया॥
 मालनाउविष्काकक॥ धर्मरुसामर्थयादं विष्काकक॥ थथीरुधर्मपत्रमभ्युची॥
 श्रीप्रह्लापात्रमिनासकगयशयाय॥ नथाननप्रकायश॥ थुगुप्रकायं निपालस
 पाल॥ वायवायगुप्याकविक्रियानाउ॥ गुनं रुलसा आहूदयकल॥ शकुल

पुत्रसाधुसाधु धनश्रधकशुत्रनरुलसां आह्लादयकल॥ ॥ कंचलन॥ ॥
 ॐ धर्मलुगनकगतप्रवदिता ४ साक्षात्पायिकं पावनिर्वीरिकं तथागस्मेधर्म
 यत्ताय ॐ दंपुष्यमद्युलंनिर्याकयामि॥ ॥ वलिविय॥ ॥ ॐ नमः ४ प्रह्लापा
 यमिह महापीतमहाश्वनः महानीलचलपंकजः पुष्परुक् ॐ दंवलियश्च
 मृगशु ॐ २ जिघृषिच २ प्रह्लावर्द्धनीः हल २ मधावर्द्धनीः द्विचि २ वद्विवर्द्धनीय
 स्वाहा॥ ॥ ॐ निधर्ममद्युलपूजा॥ ॥ नमः संधमद्युलपूजा॥ ॥ गमथा॥
 सर्वलकृशसंपूर्णसर्वालकृदावर्जित॥ समकरुडचिक्रायं मनामद्युलमूर्धम॥

ॐ संघमज्जने सर्वविघ्ननुरोरेधे हू

नमस्कात्र॥ ॥ पादाघेतय॥ ॥ रगवन् श्रीमन् श्री ३ ॐ आसंधमद्युलरुहा
 वकायपायाचमनार्घ्यप्रतिक्रिस्वाहा॥ ॥ स्नानवाय॥ ॥ ॐ आर्यावलाकिन
 श्वनायस्वाहा॥ ॐ भेषयायस्वाहा॥ ॐ गगनग ॐ शयस्वाहा॥ ॐ समकरुडायस्वाहा
 ॥ ॐ वक्रपाणीयस्वाहा॥ ॐ म ॐ धावायस्वाहा॥ ॐ सर्वधीवयशविष्कम्हीयस्वा
 हा॥ ॐ क्रितिगर्हीयस्वाहा॥ ॐ खगर्हीयस्वाहा॥ ॥ सिध्दः ॐ मकाः स्नान
 नेवद्यः मन् यधर्मी॥ भाव॥ ॥ वृद्धनमामिगतनवलपयपाशिभेष्यात्मकं
 गगनगं ॐ समकरुडयक्राधिपापवहिनाद्धनम ॐ धायं विष्कम्हिनं क्रिमिनं

II-285

धर्मरत्न वैज्याचार्य सुरत श्री महाबिहार

८३०५

चनभषगर्ह ॥ ॥ दगनाखकन ॥ ॥ खान जाकि जाना लाहाऊपाचान ॥ ॥
साहभवनामा दगिनास्यं ॐ मा वलाम्पादाय वाधिमधुनिरवधुना ॥ गंधगव
दंगकामि. गधानामग्रं एवंदित्रपिअ साधूकात्रंमदान् ॥ ॥ शास्त्राचार्यथनी
याश्रयापिनिस्संगथचलपालस्यनं आरूदयकल. अथं. थुगुलीवलास वा
धिमधुनिरवधुमरुअलंका. गधगनयाचर्यापदमलातल. संघसक गवधयाय
गर्थिअ संघधालसा. समरुअग्रयाकअन्यचानाअ. ॐ श्रवणयाअविष्काकअ
थधीअ श्रीश्रार्यावलाकिगधवयाक गवनयाय. गधननप्रकात्रय. थुगुप्रका

अनं निपालस्वपालवायवावविनतियानाधकं शिष्यनंरुलसां गुत्रयाकप्रार्थ
नायागुत्रनंरुलसांधन्यपदविल ॥ शाकलप्रुअसाधु २ धन्यधकं किमिसंरुल
सां महाउरुमगुधर्मकार्यवांछायानधकं श्रीगुत्रवडाचार्यनं आरूदयकावि
ष्का ॥ ॥ कंवलंरुनं ॥ ॥ सकिसंधेप्रतिपन्नगभ १ अनायना ४ सकिसंधे
सकजगभमिरुलप्रतिपन्नग. अरुहकअमरुगवान् आर्यावर्कि ४ वाधिसत्व
संधे ४ आवरुनीय प्रावरुनीय. समाकवधीय. अंजलीकवधीय ४ अनुरुअप्र
रुधरुअदर्शनीय. नमोसंघजलाय ॐ दं प्रुअमधुलंनिर्याकयामि ॥ ॥ वलि

सिद्धयर्थं राज्ञायै मेद्वारं सर्वं प्रति देसया मि अनुजो दैजगत पुत्र न्यो बुद्ध वेष्टि
विद्ये ॥ ॥ ॐ नमो लोका नाथाय ॥ दवा सूनन यक्रवा क्रुतवान्देन पादपमाय ॥

श्रुगणनात्रक सत्वाध्वनचिद्राय नर्पयाय महाकायधिकाय ॐ दंवलियं चा
मृगादिसहीन गृह २ सर्वसत्वाश्च नयकादि इ ४ खाक्राय २ उद्धव २ समुद्धव २
वृद्धसम्भनधर्मसम्भनसंघसम्भनसम्भवादिसम्भन ॐ श्री ४ कीं ईं रुं द्वा हा ॥
ॐ निसंघमधुल ॥ ५ ॥ ॥ नमो मूलमधुलथिसंनय ॥ ॥ गथा ॥ ॥ सर्व
सत्त्वमहाचिद्रु शुद्धप्रकृतिनिर्मलं ॥ समकरुद्रचिद्रायं धाय मधुलसाय ॥
नमस्काय ॥ ॥ पादार्चनय ॥ रुगवन् श्रीमन् श्री ३ आर्य श्री अमाद्यपागला ९

कश्चरुदायकायपायाचमनाघेप्रतिच्छस्वाहा ॥ ॥ स्वानवाय ॥ पलस्वाकाय
॥ ॐ अमाद्यपागलाकश्चवाय कीं स्वाहा ॥ ॐ कीं मेलाक्कविजयाय कीं स्वाहा ॥ ॐ
मशिपम्रं स्वाहा ॥ ॐ अमितायाय स्वाहा ॥ ॐ अमाद्योक्कगाय स्वाहा ॥ ॐ नाया
य स्वाहा ॥ ॐ रुक्मीनायाय स्वाहा ॥ ॐ सुधनकुमायाय स्वाहा ॥ ॐ आर्यावलाकि
नश्चवाय स्वाहा ॥ ॐ खंखसर्पनाय स्वाहा ॥ ॐ हयग्रीवाय स्वाहा ॥ ॐ अजिनाय
स्वाहा ॥ ॐ अपवाजिनाय स्वाहा ॥ ॐ मात्रभेन्यप्रमर्दनाय स्वाहा ॥ ॐ वनदाय स्वा
हा ॥ ॐ अकालमृगप्रगमनाय स्वाहा ॥ ॐ ऊयाय स्वाहा ॥ ॐ विजयाय स्वाहा ॥

ॐ ऊयविजयाय स्वाहा ॥ ॐ अरुयप्रदाय स्वाहा ॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥ ॐ वसुध
त्राय स्वाहा ॥ ॥ मध्यम ॥ ॥ ॐ पुष्पकवृद्धाय स्वाहा ॥ ॐ सुवर्णवर्णप्रदा
विनन्दितराजाय नमः ॥ ॐ सिंहविकीर्णराजाय नमः ॥ ॐ सिंहाविकीर्णराजाय नमः ॥ ॐ
सुप्रतिष्ठितराजाय नमः ॥ ॐ सुप्रतिष्ठितराजाय नमः ॥ ॥ पूर्व ॥ ॥
ॐ समन्तकर्मसूक्तश्रीकृष्णराजाय नमः ॥ ॐ विष्णुश्रीनमः ॥ ॐ विष्णुश्रीनमः ॥ ॐ
गिरिनमः ॥ ॐ गिरिनमः ॥ ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥ ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥ ॐ
नमः ॥ ॥ दक्षिण ॥ ॥ ॐ ककुब्धदाय नमः ॥ ॐ ककुब्धदाय नमः ॥ ॐ

कनकमूनय नमः ॥ ॐ काशपाय नमः ॥ ॐ काशपाय नमः ॥ ॐ काशपाय नमः ॥
ॐ गङ्गामूनय नमः ॥ ॥ पश्चिम ॥ ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा
ननामध्याय नमः ॥ ॐ समन्तवरासविजितसंग्रामश्रिय न
मः ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा नमः ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा नमः ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा नमः ॥ ॐ सुप्रतिष्ठा नमः ॥
ॐ सुप्रतिष्ठा नमः ॥ ॥ उरु ॥ ॥ ॐ पुष्पनाथाय नमः ॥
॥ सुप्रतिष्ठा ॥ ॥ ॐ धूपनाथाय नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॐ
दीपनाथाय नमः ॥ ॥ वायु ॥ ॥ ॐ गङ्गनाथाय नमः ॥ ॥

सर्वप्राप्तिवधात्. सकलप्राप्तिदकसयाक दयावायमाल ॥ पत्रखहजरात्. भ
 वयाधनसलारयायमन्. भवयामीयाक मनशान्यमन्. जानाशानपनिस्
 कायमन्. भवयाकार्यसविघ्नयायमन्. भवयात् अष्टवादखेलायमन् ॥
 हनंमद्यपानरुक्रयायमन् ॥ नाजाअशुआसनसखानंमन्. मालावर्ष्क. ना
 नायंगवित्रंगनं हनाअनयायु खाननंक्रयमन् ॥ ॥ नृन्गीन वाद्य नूर्य म्
 वृत्त. प्याखनक्रयमन् ॥ भ्रूलंमन् ॥ घंगप्रयमन् ॥ पञ्चनालआदिनं वा
 यथायमन् ॥ ललितासनान्. गुनिकातस्यचानंमन् ॥ अत्रकवर्णात्. वृत्तः

चर्यमन्. ॥ तथावाशदात्. थआवचनंभवयात् मखयुखेलायमन् ॥ ॥
 नदाषऊनात् ॥ दाषमइक्रयात् नदाषदयकरेलायमन् ॥ थमनंमखनायुख
 नाधायमन् ॥ वीयासनान्. वीयआसनयाठचानमन् ॥ ॥ नीलामिषाववन
 ॥ ॥ लाटाचिचिकंरुक्रयायमन् ॥ दशदाषआदिनं मृयाहंवित्रकका
 म्पहं ॥ ॥ ध्वनृजिनापापदकंथनीजिनं गालनधकं गुत्रयाआहान्यनाअ
 कथाकनप्रकाशथुयुवंदतंरुलसांविक्तियात् ॥ ॥ शुद्धकंठुं गुषायलास
 सहगं पञ्चवप्रसक्तिं सर्वरुविदधनमारुयवन् श्रीपागजाधारुमं वामना

पिकमधुलंचकमलंद॥ अरुमपूरुके. वरुहंपयमश्वननुगित्रसा लाकान्
 कंपामया॥ ॥ शकलपूत्र. आउरुलसां पयमश्वन शुभाघपागलाकश्वन
 रुयीअ गथीठम धलसा॥ ॥ शुद्धक धुनुवायलास सदगं॥ ॥ मृगक
 दाखलखानथं चापुथं रुयुगुवर्क रुयाअ विष्ठाकम. पश्वनसक्तिं.
 हनंपलखानमासनयादं विष्ठाकम॥ ॥ सर्वह विदधानमारुयवत्रं श्री
 पागजापारुमं॥ वामनापिकमधुलंचकमलंद॥ अरुमपूरुके वरुहंपय
 मश्वननुगित्रसा लाकान् कंपामया॥ श्रीमृमिगारुनथागतत्वं थअगित्रस

धयलपाअ विष्ठाक॥ मरुयमूडा. वयदमूडा. पाग. उपमाला. थुतिअया
 थकालाहानं प्यगुलीमूडाकनाअ विष्ठाक॥ हनंखअया प्यकालाहानं रुकु
 आनाअ विष्ठाक धलसा. कंधय. पलखान. गिदधु. पूरुक. थनं प्यगुलीमू
 डाकनाअ विष्ठाक॥ ॥ शकलपूत्र. थथीमृ श्रीमृमाघपागलाकश्वनया
 न रुपनीस्पनं रुलसां कपालनं शकपूरुं नमस्कायया धकेयुवद्रसत्वनं मृ
 हादयकल॥ नमाव्हाय॥ नमाधर्माय॥ नमासंघाय नमानम॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ थन वनसूत्रका. खअलाहानसगयाअ. गंखलंखनं हाय॥ मरु ॥

ॐ सरस्वती नमः ॥ २९ ॥

ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ ॥ पंचायतन पूजायानां मधुलसमयक ॥ वाक् ॥
ॐ नमो भगवते श्रीगणेशाय ॥ धर्मस्य प्रवक्तृमि वक्रधर्मकी
॥ ॥ धन अर्घ्याय ॥ ॥ महादान अथ दानपत्रिकाय ॥ ॥ अतः
कस्तुरी लहि विहाय संप्रयत्तये वा पुष्पं ह मग गिना मसि सादि संरुवं ॥ ला
जा कस्तुरी लहि नील लिंग भूषणे श्रीगणेशाय प्रणि प्रणि अर्घ्याय ॥
ॐ गय २ गिरि २ कय २ पय २ हय २ हाहा ही ही ॐ काय वक्रधर्म धय २
धिरि २ धृत् २ नय २ मय २ जग्भी ह सुप्रणिमधिनं कल २ रुगवन् सामा

दिम्पु यमवत्त कवच धनदम्पि दवग (दस्य) चिह्नं वदय श्रीमदभा
घपागला कश्चरुदायकाय चयत कमल अर्घ्य प्रणि च दीं स्वाहा ॥ ॥ अंख
पूजा ॥ अंख निधनाय स्वाहा ॥ पद्म निधनाय स्वाहा ॥ ॥ भाद्र ॥ नमः कुरु
वान्नाथ भस्मासि जगता किल ॥ सदा नमस्तस्मिन् कुरु दयामयी ॥
॥ श्रीधर कविय ॥ द्वाकालस्वानविय ॥ ॥ आपदक स्यात् आपयाक ॥
॥ ॥ धन द्वाकालस्वान आरुह श वाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॥
ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ वाधिसत्वाय महासत्वाय महाकाय ॥

मन्दलदेहके ॥ अमाध्यासलाकं त्वया ॥ ॐ समंवाहं तु मां वृद्धा दत्तदी गलां कथां सौने मतीता बुद्धा
 भगवान् नो क्रिसत्वा आचार्य पा ध्यायेत् अहं मे नामा मन्की चित्ता यना के नी भी सर्वं वृद्ध वं ह्रीं सत्यमाता
 हीकाय ॥ नमः ॥ ॐ अमाध्यासला महागील शुद्धसत्त्व रुच २ सरुच २ पद्म पीता ऐत
 विरुषिन रुजधन समतावला किन श्रवाय ॥ ॐ आर्द्रं रुद्र स्वाहा ॥ ६० ॥
 वलिविय ॥ ॥ ॐ नमो लाक श्रवाय ॥ अमाध्यासला यज्ञे लाक दर्पनाय म
 हाकाय हीकाय ॥ एकाग्रचित्ताय सकलभागदायि ६ इष्टसह इष्टनर्पय सं
 मनाय ॥ ॐ दं वलि इष्टादिसहि न गृहीता पशुं ऊ २ भक्ति पूष्टिं यक्रां कृत्तु म ॐ आ
 र्द्रं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ नायहाल ॥ सिरुं लय ॥ धनं थं पूजा धी पूजाकाय ॥
 ॥ ॥ किञ्चनिसलाकाय ॥ ॥ शुभ्रपूजाकाय ॥ ॥ चाक्रपूजा ॥ ॥
 लयित्वा सर्वं वृद्ध वं ह्रीं सत्वा नामा ग्य प्पिं नी के अग्रपावरया प्रती दिसया
 मीनमुस्मरं पुती कादयामी श्री अमाध्यासला कं त्वरे पूजामन्दलनी

प्पानि यामी ॥ अवी काये ॥ ६

दिगवलि ॥ वरुणमधुलदनक ॥ खानकिनन ॥ शुभ्रपूजा ॥ दक्षिण ॥ किञ्च
 निसलाकाय ॥ क्रमापन ॥ ॥ क्रानि २ मधुलविसर्जनयाक ॥ वनसुत्रका
 लशालाय ॥ ॥ सिद्धलंनिक ॥ खानविय ॥ वनसुत्र पंचसुत्रविय ॥ कल
 गारिषकविय ॥ ॥ मधुलपदक्षिणयाय ॥ ॥ ॐ निमृषमी वनसमा
 फ ॥ ॥ शुभ्रं ॥

मन्वन् १०४३ आश्विन शुदि १ याऊ ३ एकदिन ॐ दं पूरु क चक्रमहाविहय
 क्क वक्रयाऊनलिखितं ॥

सीता वन गंग म एडल क सल देव पुजा ॥ सनाधार ॥ वन पुजा ॥ सी
 मा नी बो सन ॥ माडल थीले कि गती न ॥ सनाधार ॥ समापन ॥ म एड
 (सीले कि गी) ॥ व पे ॥ नका म एडल स तो न ते कल ता भी निक ॥ सी
 पा पी ये ॥ सी स न न स धं त ये ॥ गीन पुजा ॥ दक्षना ॥ कोषा नी पे
 नी स ज नी ॥ ह स र्क ॥ सि ह स ॥ ल न क्हा पे ॥ सी र लं ती दे ॥ सी थ
 स ज ज ज ॥ बा धा ग ॥ वी ॥ मे ॥ ना ग ॥ पुजा ॥ अ र्च नी पे ॥ पु र्नी क
 ल स ॥ य डि ॥ लू हा न य ॥ ३ ग ग म ह ॥ कु मारी पुजा य पि ॥

ना म य न अ र्च नी पे य के ॥ दान वती प्य डि ॥ ॐ ॥ न न वा
 सु क र त ह क ॥ क क ग न क ॥ प य ॥ मा ह प य ॥ सं व दाल ॥ कु ली क ॥ व ह
 ने ॥ व ह ॥ ह ने पाल ॥ दे व नी ॥ स म ति वि ॥ म हा सी र्वा ॥ न ए ड थ ए अ प
 लाल ॥ न न द न ए डे य न सा ग र ॥ मा हा सा ग र ॥ अ व न स ॥ श्री कं ति
 मा हा ॥ को नी ॥ ल कं नी ॥ सु र स र प ॥ म हा र प ॥ भ द हि क म ह नि द स
 ए र ॥ म हा ल रि ॥ भ द १ ॥ आ ग १ ॥ मा हा ना ग वि प न यो ॥ भू र्भू व द
 न प ने ॥ अ म्क स माली पु र्नी ती वी कृ ति १ ना ग ए ज ब ल क म
 ला पे ॥ अ र्च पु र्नी द स ॥ ॥ ॥

[illegible]

सहज वाये १००० इत्युनील मनीक दा. बी या गु पुं य ॥ ७ ॥ कारी क ॥ सध
मि गुण दाग धाये १००० पदा एग मनी क दान बा या गु पुं य ॥ ८ ॥ भागी
गे सहश्रदाने दा संमी १००० ह्य सा दान बी या गु पुं य ॥ ९ ॥ घोष ॥ रत्न व
वि. सह आनी थावे ६००० समाल्न धाये ॥ चक्र एग - हमी एतः अथ एतः पुह
व एतः बलि एतः पायक एतः मनी एतः अरे तं स पु एतः न पावः भृकु
ब नी एता जु पू ॥ १० ॥ माघ ॥ चक्र कां ना. सह श्र ल धाये १००० ग्वन व डी
कां नी मनी क दान या ना गु पुं य ॥ ११ ॥ प्रगुण ॥ सह श्र के स दान फल
प्राप्ती धाये १००० के त्या दान या ना गु पुं य ॥ १२ ॥ बी श्र वे र लाई ॥ १३ ॥

